प्रार्थना

(महत्त्व एवं उदाहरण)

भूमिका

'उषःकालमें प्रार्थनाकी कुंजीसे दिनका द्वार खोलें और रातको प्रार्थनाकी कुंडी डालकर उसे बंद कर लें', ऐसा सुवचन है । दैनिक जीवनकी भागदौडमें हम मनःशांति खो बैठते हैं । वह मनःशांति प्रार्थनासे मिलती है । असंभव संभव लगने लगता है; क्योंकि प्रार्थनासे श्रद्धाका बल और ईश्वरके आशीर्वाद मिलते हैं । वैज्ञानिकोंने भी प्रार्थनाके महत्त्वको स्वीकार किया है । जापानी वैज्ञानिक डॉ. मासारू इमोटो कहते हैं, 'प्रार्थनासे स्वास्थ्यपर अच्छा परिणाम होता है ।' ईश्वरप्राप्ति हेतु साधना करनेवालोंके लिए तो प्रार्थना, निरंतर ईश्वरीय

सायुज्यमें (आंतरिक संपर्कमें) रहनेके लिए अनमोल साधन ही है ।

विद्यार्थी, गृहिणी, कर्मचारी, अभियंता, वैद्य, किसान, साधक, राष्ट्राभिमानी एवं धर्माभिमानी, सभीके लिए उपयुक्त सरल प्रार्थनाएं इस लघुग्रंथमें दी गई हैं । साथ ही दैनिक पूजा-अर्चना, त्योहार-उत्सव, दिनचर्या, व्याधियां (बीमारी), क्रय (खरीदारी) करना आदि विविध प्रसंगोंमें क्या प्रार्थनाएं करनी चाहिए, यह भी आप इस लघुग्रंथसे जान पाएंगे ।

सभी इस लघुग्रंथका लाभ उठाकर जीवनको आनंदमय और सफल बनाएं, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! - **संकलनकर्ता**

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

卐 'सूक्ष्म' शब्दके संदर्भमें कुछ संज्ञाओंका अर्थ ८

卐 भूमिका ९

卐 आध्यात्मिक परिभाषामें प्रस्तावना ! ११

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ १३

२. महत्त्व १४

३. लाभ १६

४. प्रकार २१

५. प्रार्थना अर्थात बंधनरहित साधना ! २३

६. प्रार्थना किससे करें ? २५

७. प्रार्थना कैसे करें ? २६

८. प्रार्थनाके संदर्भमें होनेवाली चूकें ३४

९. प्रार्थनाके उदाहरण ३६

* सप्तदेवता, स्थानदेवतासे तथा दैनिक

पूजा-अर्चना, धार्मिक विधियोंके अवसरपर
की जानेवाली प्रार्थना ३७

* दिनचर्यासे संबंधित एवं नैमित्तिक प्रार्थना ४०

* विविध कार्यक्षेत्रोंसे संबंधित व्यक्तियोंके लिए
उपयुक्त विशेष प्रार्थनाएं ४४

* विद्यार्थी * गृहिणी ४४

* चिकित्सक (डॉक्टर) * अधिवक्ता ५०

* कीर्तनकार / प्रवचनकार * सैनिक ५१

* विभिन्न कृत्योंमें सहायक सामग्रीसे
(उपकरणोंसे) की जानेवाली प्रार्थना ५६

* जप अच्छा होने हेतु की जानेवाली प्रार्थना ५८

* भावजागृति हेतु तथा अनिष्ट शक्तियोंकी
पीडा के निवारण हेतु की जानेवाली प्रार्थना ६२

१०. विदेशियोंको प्रार्थनाका महत्त्व अब ज्ञात होना ! ६६

११. प्रार्थनाके साथ ही सर्वांगी साधना करें ! ६८